

Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

*Golden Research
Thoughts*

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya [Malaysia]	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus Pop	George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher	Nawab Ali Khan College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust),Meerut	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra
	Sonal Singh	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**



वर्तमान युग में तृटिपूर्ण शिक्षा प्रणाली – उपचार

टी. श्रीनिवासुलु

प्राचार्य, यस.वी. महाविद्यालय, अनंतपुरमु, आन्ध्रप्रदेश



सारांश: वर्तमान युग में शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण हो गई है। बालक के सर्वांगीण विकास के बारे में समाज का ध्यान नहीं है। सिर्फ जीविका चलाने के लिए आर्थिक विकास पर ही अधिक महत्व दे रहे हैं। माता-पिता और गुरुजन भी चरित्र के निर्माण पर जोर नहीं देते हुए सिर्फ प्रथम स्थान के भागदौड़ में पड़े हैं। सृजनात्मकता, नेतृत्व के लक्षण, संवेगात्मक विकास की ओर देख भी नहीं रहे हैं। वर्तमान युग में सरकारी पाठशालाओं में शिक्षा प्रणाली में समूल परिवर्तन अनिवार्य है। अनेक वैज्ञानिक विधियों को उपयोग में नहीं लाने के कारण बालक में नैतिक सौंदर्य अंतर्धान हो रही है इसके उपचार अत्यंत आवश्यक है। भाविसमाज का निर्माण इन बालकों पर निर्भर रहने के कारण शिक्षक सचेत हो-कर कार्यरत होना है।

Key Words : वर्तमान शिक्षा, दोषपूर्ण विधियों, उपचार.

प्रस्तावना:

आजकाल बाल केन्द्रित शिक्षा कहते हैं। लेकिन बालक के रुचि और उसके मानसिक संवेगों को महत्व ही नहीं दे रहे हैं। माता-पिता और गुरु तीनों-देवता माने जाते हैं। वही देवता अपनी इच्छाओं के अनुसार इन नादान बच्चों को नचा रहे हैं। प्रोबेल, मातिसरी जैसे महान ज्ञानी लाख समझाए लेकिन समाज में सबकुछ उल्टा पुलटा हो रहा है। अपने अभिभावकों के हाथ पकड़ कर मासूम चेहरे से पाठशाला में कदम रखने वाला बालक दूसरे दिन से अकेले आयेगा। हर एक के लिए प्रकाशमान सूर्योदय और अनंत आनंदमय सागर भावि जीवन में होंगे। हर एक के लिए निजी सुख संतोष होंगे। पाठशाला उनके सुख संतोषों को गायब नहीं करना है। बालक अपने नये संसार के उज्वल आनंद और उमंग को इसी पाठशाला से प्राप्त करना है। इसके विरुद्ध हो रहा है। नई संसार से उन्हें शाश्वत आनंद कैसे पाना है, पाठशाला के जरिये बालक विदित होना है। परंतु इसके विरुद्ध सब कुछ हो रहा है। श्यामपट के घेरे में बन्दी बनाकर, कभी समाप्त न होने वाली पढाई रूझान और ऊबन उत्पन्न कर देने वाली इस पध्दति से अनेक महोन्नत विचार यहाँ डबाडोल हो जाते हैं।

छात्र घण्टों श्यामपट को देख कर ज्यादा सीखता है या पाठशाला के खिडकी से बाहर के संसार को देखकर ज्यादा सीखता है। इन्हें कौन बतायेंगे? पाठशाला में शिक्षा छात्र के लिए दण्ड हो गया है। जो ज्ञान पाठशाला में प्राप्त करते हैं, उसे बाह्य संसार में देखकर, सुनकर या स्पर्श कर ही धारणा कर सकता है। स्थायी रूप में ज्ञान करने का यज्ञ बाह्य संसार हो। छात्रों के जिज्ञासा रूपि प्यास को श्यामपट से नहीं बुझाना है। उनके विचारों के जन्मस्थान से उस सजीव जल को उन्हे पिलाना वह सजीव क्षार ही छात्रों को शोधक-जिज्ञासू-कवि सृजनकर बना सकती है। छात्रों में असाधारण नैतिक सौन्दर्य को जागृत करने के लिए, काव्यात्मक, रसात्मक लहरों से उन्हें पुनीत करना है।

आधुनिक युग में बाल्यावस्था से युवावस्था में कदम रखने वाले छात्र अनियंत्रित सिनेमा, दूरदर्शन रेडियो इत्यादि से सौन्दर्य अवबोध नहीं करते हैं। यहाँ तक कि - उनका दुष्प्रभाव उनपर ज्यादा है। बाल्यावस्था में हर छात्र - के लिए सहृदयता पूर्वक व्यवहार वाञ्छनीय है। लेकिन निर्दयता पूर्ण व्यवहार से छात्र में निर्ममता उत्पन्न कर देते हैं। आन्तरिक आवश्यकताओं की पहचान ही आत्मीयता है। पाठशाला में प्राप्त ज्ञान और बाह्य संसार के सत्य एक दूसरे से विरुद्ध है। केवल तार्किक ज्ञान के आधार पर श्यामपट की शिक्षा का नाता जोड़ते हैं। अध्यापक की इस पध्दति से छात्र में जडता उत्पन्न हो जाना हम देख सकते हैं। माता पिता और अध्यापक का उद्देश्य यह रहा कि समाचार प्रवाह से वे अपना प्राप्त ज्ञान को छात्र के मस्तिष्क में भर देना चाहते हैं। यह विपरीत प्रतिक्रिया है। ज्ञान प्रवाह एक स्वच्छेद झरना जैसे बहना है। हम उस ज्ञान धारा को मशीन के द्वारा कृत्रिम नाले के जरिये बहाने से बालक में जिज्ञासा, इच्छा लुप्त हो जाते हैं। बालक जड पदार्थ बन जाता है।

असमर्थ अध्यापक जीवन सत्यों को समझाता है। समर्थ अध्यापक छात्र को जीवन सत्यों का आविश्कार कैसे करना है, सिखायेगा। छात्र स्वयं शोध करने के लिए उद्यत करायेंगा। पाठशाला का मुख्य कर्तव्य बालक को सृतनात्मकता से चिंतन करने, नये विषयों के बारे में शोधन करने की जिज्ञासा उत्पन्न करना है। जो अध्यापिक अपना शिक्षण कार्य के प्रति श्रद्धा रखता है वही अपने छात्रों के प्रति प्रेमभाव से रहता है। वह सभी पुस्तकों को पढ़कर भी अपने

काम, और छात्रों को पसंद ना करने वाले अध्यापक से सौ गुणा उत्तम होता है। सब लोक कहते हैं आजकल अच्छाई गायब होता जा रहा है। यह विचार ही गलत है - माता पिता और गुरु अच्छाई का सृजन कर सकते हैं। सब से पहले अध्यापक का उद्देश्य यह होना है कि छात्र में नैतिक सौन्दर्य के साथ ज्ञान प्रदान करना है। आजकल के छात्रों को शारीरिक परिश्रम करना सिखाना है। श्रम और ज्ञानात्मक कौशल्यों के द्वारा छात्र जो सोचते हैं उसे अपने हाथों से स्वयं करके आत्मिक आनंद प्राप्त करता है।

छात्र के व्यक्तिगत अभिरुचियों को हम ध्यान नहीं देना उसके लिए अन्याय ही है। छात्र किसी न किसी क्षेत्र में असाधारण कौशल प्राप्त करने के पश्चात ही व्यतिव का निर्माण हो पायेगा। सरकारी पाठशालाओं में आजकल शिक्षण प्रक्रिया एक प्रहसन हो गया है। सिर्फ गैर सरकारी पाठशालाओं में शिक्षण प्रक्रिया में तोडा सा सुधार आया है। कुछ ई-तकनीकी पाठशालाएँ इस कार्य में आगे हैं। लेकिन सरकारी पाठशालाओं तकनीकी का उपयोग बहुत कम है। अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया में नीरसता भर रहा है। वह न फलैण्डर की अन्तः किया विश्लेषण प्रणाली को नहीं अपना रहा है, और न तो ब्लूम की शिक्षण प्रणाली ठीक से नहीं अपना रहा है। अन्तः किया विश्लेषण प्रणाली में फलैण्डर ने शाब्दिक व्यवहार को तीन इकाइयों में विभाजित किया है। अध्यापक के लिए प्रत्यक्ष तीन और अप्रत्यक्ष वार्ता के रूप में चार शाब्दिक व्यवहार निश्चित किये हैं। शिक्षक छात्रों की भावनाओं को स्वीकार करना है। छात्रों की प्रशंसा करना या प्रोत्साहन देना है। छात्रों के विचारों को स्वीकारना है, या प्रयोग में लाना है। छात्रों से प्रश्न पूछना है। शिक्षक व्याख्यान देना है। वाञ्छित या अवाञ्छित कार्यों के प्रति आदेश देना है। छात्र क्रियाओं की आलोचना करना है। लेकिन अधिकतम शिक्षक इन सभी कार्यों पर ध्यान न दे कर दो ही कार्यों पर ही ध्यान दे रहे हैं। इतना ही नहीं अध्यापक छात्र क्रियाओं को भी प्रोत्साहन नहीं दे रहे हैं। शिक्षक छात्र के अनुक्रियाओं के अनुरूप उपचारात्मक ब्याह - रचना का निर्माण कर लेना है।

शिक्षक पृष्ठपोषण द्वारा कक्षा-कक्षा व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है। लेकिन शिक्षक स्वमूल्यांकन के लिए सन्निह नहीं रहता है। कक्षा में प्रजातान्त्रिक रहने से छात्र अधिक विकसित हो सकता है। आजकल शिक्षक कक्षा-कक्षा में निरंकुश व्यवहार को अधिक अपना ने के कारण छात्र शिक्षक के आदेशों का पालन करता है या अनुकरण करता है। उसमें सृजनात्मकता मुरझा जाने का यह भी एक कारण है। बेंजमिन ब्लूम के शिक्षण उद्देश्यों को पूर्ण रूप में विस्मरण किया गया है। बालक में संज्ञानात्मक बुद्धि के क्षेत्र में विकास, संवेगात्मक बुद्धि के क्षेत्र में विकास और मानसिक गत्यात्मक क्षेत्र में विकास लाने में असफल हो रहे हैं।

शहरी जीवन में शिक्षा प्रणालियाँ बदल रहे हैं। लेकिन ग्रामीण सरकारी पाठशालाओ देश पूर्ण शिक्षण विधियों अपना रहे हैं। प्राप्त ज्ञान को स्थिर करने के लिए दैनंदिन जीवन में उस ज्ञान का उपयोग करना आवश्यक होता है। छात्र अंशों का विश्लेषण और तार्किक संबंध को समझना उसके शिक्षण कार्य होते हैं। इन कार्यों को संपन्न करने अगर छात्र कुछ प्रश्न पूछता है तो उस के लिए ठीक उत्तर मिलना भी कठिन हो गया है। अध्यापक का कार्य पाठ पढ़कर समझाने तक रह गया, उस में विश्लेषण और तार्किक दृष्टांतों की कोई गुंजाईश नहीं रहती है। एक अंश जो पाठयांश में दिया गया है। वहाँ तक शिक्षण प्रक्रिया सीमित रह जाती है। छात्र विभिन्न प्रकार के अंत के बारे में सोचना। (एक्स्ट्रापोलेशन) सरकारी पाठशालाओं में दुर्लभ है। उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि

के क्षेत्र में विकास और भी कठिन हो गया है। छात्र ज्ञान को प्राप्त कर परीक्षाओं में अभिव्यक्तीकरण तक सीमित रह गया है। प्राप्त ज्ञान से छात्र में प्रतिक्रियायें विकसित होना है। जीवन मूल्यों का व्यवस्थापन विद्यार्थी जीवन में ही होना है। अध्यापक छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण करने के उद्देश्य निर्धारित कर लेना है। वेतन प्राप्ति के लिए मात्र शिक्षण विधियों अपनाएने से अध्यापन कार्य में निरासक्ति बढ़ जाती है।

समाज में बालक विभिन्न प्रकार के चिंतन करने पर अभिभावक उनको उत्साहित नहीं करते हैं। इनकी आलोचना करते हैं। पारंपरिक चिंतन करनेवाले छात्रों को प्रेरित करते हैं। कल्पना करने से रोकते हैं। कठोर अनुशासन छात्रों के लिए स्वतंत्रता पूर्ण चिंतन करने में अवरोध बनती है। कक्षाओं में छात्रों की संख्या आवश्यकता से अधिक होना भी एक कारण है। अध्यापक गवेशणात्मक तथा समस्या समाधान की विधि जिसमें हस्तक्षेप न करने वाली विधि (Principle of Non-Interference) को अपना कर उसमें संपूर्ण नागरिक के लक्षणों को अंकुरित करना है। उसमें समग्र व्यक्तित्व (Integrated Personality) के लक्षणों को प्राण प्रतिष्ठा करना है। छात्र में जिज्ञासा जागृत कर सुन्दर सुनहरे भविष्य को साकार बनाने के लिए छात्र को उद्युत करना है।

चार दीवारों में बन्दी बनाकर छात्र से घण्टों सिध्दांतों को रटवाने से उसे सृजनात्मक सामाजिक और कर्तव्यनिष्ठावान नागरिक नहीं बना सकते हैं। छात्र प्रत्यक्ष और प्रयोगात्मक ज्ञान से वंचित किया जा रहे हैं। एडगर डेल अपने अनुभवों को शब्दिक शिक्षण विधियों कनिष्ठ प्रयोजन बताते हैं। भारत सरकार द्वारा अगस्त 1975 को दूर पाठशाला में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। दूरदर्शन के द्वारा 2400 ग्रामों तक शिक्षा दी गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा-समूह संप्रेषण-कोष्ठ का आयोजन किया गया है। 1991 से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय दूरस्थ विश्व विद्यालय दूरदर्शन के द्वारा शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। भारत सरकार के द्वारा अनेक प्रणालियाँ रचे गये हैं, जिन से दूरदर्शन और संगणक द्वारा शिक्षा प्रदान किये जाना चाहिए। वर्तमान युग में भी अध्यापक शिक्षण का अर्थ व्याख्यान और प्रश्न पूछने तक ही ले रहा है। यह एक गलत विचार है जो आजकल अधिकतम अध्यापकों में पाई जाती है। छात्रों को विभिन्न प्रकार से जिज्ञासा उत्पन्न कर, शिक्षण प्रक्रिया को और उत्साह पूर्ण करने के लिए इण्टल संस्था भविष्य के लिए शिक्षा :दजमस 1) ज्मंबी ज्व जैम थनजनतमद्द एक कार्यक्रम किया गया है। इतना ही नहीं अध्यापक के लिए इण्टरनेट के द्वारा निम्नांकित बेबसेट उपयोगी सिध्द होते हैं। उन्नत स्तर का चिन्तन हेतु

<http://www.selu.edu/academics/education/tec/think.html> उपयोगी है। तुलनात्मक आलोचना और समस्या – समाधान हेतु <http://www.falcon.jum.edu/ramseyi/cirtical.html> उपयोगी है। छात्रों के लिए आवश्यक प्रश्नों के समाधान नहीं प्राप्त होने पर उसके लिए <http://Galileo.org/tips/essential-questions.html> बहुत उपयोगी सुध्द होता है।

शिक्षण प्रक्रिया द्विमार्गीय प्रक्रिया होनी चाहिए। इस में अध्यापक और छात्र एक दूसरे को परस्पर प्रभावित कर लेना है। छात्रों के विकास और पिछड़ेपन के अनुरूप अपने शिक्षण कार्यों में सुधार लाए। छात्र भी अध्यापक के शिक्षण कार्यों से प्रभावित हो कर अपनी कमजोरिया दूर कर लेना है। शिक्षक हजार रसहीन शब्दों को उपयोग करने से भी, एक प्रभाव पूर्ण कृत्य को अपनाये। छात्र के चारों ओर के दीवारों को शिक्षक अपने अनुभवों से गिरा कर, एक प्रभावशाली रसमय संसार का निर्माण करे। इस रसहीन शिक्षण पध्दति को समाप्त कर सजीवता नामक अमृत वर्षा छात्र के संसार में वृष्टि कराये। जिसके लिए आवश्यक तकनीकी का उपयोग भी करे। शिक्षा के प्रति छात्र में रोचकता, जिज्ञासा उत्पन्न कर, सृजनात्मक विचारों का संचार कराये।

REFERENCE :

- 1)N.A.Flander Interaction Analysis in the Class Room: A manual for observers, Ann Arbor: University of Michigan.
- 2)N.A.Flanders “ Teacher influence in the class room in” A Bellack editor, Teachers college, Columbia University.
- 3)Task, Oriented Question Construction whell based on Benjamin Bloom's Taxonomy. 2001
- 4)Intel® Teach To The Future.



टी. श्रीनिवासुलु

प्राचार्य, यस.वी. महाविद्यालय, अनंतपुरमु, आन्ध्रप्रदेश

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net